71

जुलाई-दिसम्बर, 2016

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066
(अंक-71, जुलाई-दिसम्बर, 2016)

संरक्षक
प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति

प्रधान सम्पादक
प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक
प्रो. निवेदिता मैत्रा
डॉ. पंकज चतुर्वेदी
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. छबिल कुमार मेहेर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश) - 470003
दूरभाष : (07582) 264455
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

शशिकुमार सिंह
सागर

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. वीरेन्द्र मोहन, हिन्दी विभाग
- प्रो. एस.जे. सिंह, मनोविज्ञान विभाग
- प्रो. ए.एन. शर्मा, मानवशास्त्र विभाग
- प्रो. दिवाकर शर्मा, समाजशास्त्र विभाग
- प्रो. पी.पी. सिंह, विधि विभाग
- प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, इतिहास विभाग
- डॉ. अनुपमा कौशिक, राजनीतिशास्त्र विभाग

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-71, जुलाई-दिसम्बर, 2016

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.) – 470003

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क		
	प्रति अंक	आजीवन
व्यक्तिगत	रु. 150/-	रु. 2000/-
संस्थागत	रु. 200/-	रु. 4000/-

अनुक्रमणिका

नारी-विमर्श : पाश्चात्य ज्ञानोदय में स्त्री की वापसी 5
विश्वनाथ मिश्र

निराला और उनकी शक्ति-पूजा 33
छबिल कुमार मेहेर

कवि-कथाकार कुँवर नारायण की कहानियाँ 49
मिथलेश शरण चौबे

आलोचना के स्वायत्त आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी 62
आशुतोष

कृष्णा सोबती : 'समय सरगम' और वृद्धों की समस्याएँ 69
विपिन शर्मा 'अनहद'

मोचीराम कविता का शैली वैज्ञानिक विश्लेषण 81
अफरोज बेगम

कामता प्रसाद गुरु का व्युत्पत्ति-विचार : सामर्थ्य और सीमा 91
रवीन्द्र कुमार पाठक

आल्हा-ऊदल एवं पृथ्वीराज चौहान 106
माधवी श्रीवास्तव

आयुर्वैदिक चिकित्सा का वैदिक स्वरूप 113
शशिकुमार सिंह

प्राचीन भारत में राज भगिनी 120
ज्योति सराफ

भारतीय किसान आन्दोलन का समाजशास्त्रीय अनुशीलन 125
नंदी पटोदिया

भारतीय अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की भूमिका 131
सुनीता जैन

मृत्यु दर्शन 139
सुरेन्द्रसिंह नेगी

आयुर्वेदिक चिकित्सा का वैदिक स्वरूप

शशिकुमार सिंह

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।। शुक्लयजुर्वेद 30/3
(हे देव सविता, समस्त पापों को हमसे दूर करिये, हमारे लिए
जो कल्याणकारी वस्तु हो उसे हमें प्राप्त कराइये)

वेद इस विशाल ब्रह्माण्ड में अनेक प्रकार से जागरूक तथा नाना अभिव्यक्तियों में प्रकाशशील एक अचिन्त्य शक्ति का शाब्दिक उन्मेष है - वर्णमय विग्रह है। यह तर्क की कर्कश पद्धति पर व्याख्यात सिद्धान्तों का समुच्चय नहीं अपितु वह प्रातिभचक्षु से साक्षात्कृत तथ्यों का प्रशंसनीय पुञ्ज है। वेद को परिभाषित करते हुए महान् वेदज्ञ दयानन्द सरस्वती कहते हैं कि जिसके अन्तर्गत समस्त सत्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त होता है उसे वेद कहा जाता है, विदन्ति-जानन्ति, विद्यन्ते-भवन्ति, विन्दन्ते-लभन्ते, विन्दते-विचारयन्ति सर्वे सर्वाः सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः।[1] वेद की वाणी अनादि, अनन्त, और सनातन है। वेदो में ज्ञान और विज्ञान का विशाल भण्डार अधिष्ठित है। वेद के व्याख्याकार सायण का मानना है कि जिन तत्त्वों की प्रतीति ज्ञानेन्द्रिय आदि के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से सम्भव नहीं हो पाती है तथा जिनका अनुमान आदि से भी भान नहीं हो पाता ऐसे तत्त्वों का भी ज्ञान वेदों के द्वारा सहज ही हो जाता है -

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता।।[2]

वेदों के ज्ञान ही मानव जीवन में सुख एवं शान्ति के मार्ग को आलोकित करते हैं, संसार के समस्त विद्याओं के मूल वेदों में ही निहित बताए गये हैं - ''सर्वज्ञानमयो हि सः''[3] वैदिक ज्ञान की प्रेरणा से ही मनुष्य अपने पुरुषार्थ सिद्धि के लिए प्रेरित होता है। पुरुषार्थ के सफल प्रतिपादन के लिए सर्वाधिक आवश्यक होती है मनुष्य की स्वस्थ शरीर। निरोगी और स्वस्थ शरीर वाला व्यक्ति ही धर्मादि कार्य में समर्थ हो पाता है क्योंकि कहा भी गया है - ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्''[4] आयुर्वेद शरीर के स्वस्थ रखने की प्रेरणा देने वाला प्रमुख शास्त्र है। आयुर्वेद शास्त्र मानव शरीर को संकट में डालने वाली आधि-व्याधियों से मुक्ति के मार्ग का प्रतिपादन करता है। महर्षि चरक ने आयुर्वेद का लक्षण देते हुए कहा है - ''आयुर्वेदयति इति आयुर्वेदः''[5] अर्थात् जो आयु का ज्ञान कराता है, वह आयुर्वेद है। महर्षि सुश्रुत का मानना है कि जिसमें आयु के हितकर एवं अहितकर तत्त्वों का विचार हो और जो दीर्घ आयु प्राप्त कराने वाला हो उसे आयुर्वेद कहते हैं - आयुरस्मिन् विद्यतेऽनेन वा

मध्य भारती-71, जुलाई-दिसम्बर, 2016, ISSN 0974-0066, *pp. 113-119*